एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

ग्रीष्मकालीन और गहरी के जुताई के फायदे

(*सुमित कुमार यादव[1], करिश्मा यादव[2] एवं महेंद्र कुमार गोरा[1])
राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर-313001 (राजस्थान)
श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर-303328 (राजस्थान)
*syadav12150@gmail.com

फसल लगाने से पहले जुताई करना हमेशा फायदेमंद रहता है। जुताई करने से खरपतवार नष्ट हो जाते हैं मिट्टी में मौजूद कीड़े–मकौड़े और उनके अंडे ऊपर आ जाते हैं, जो धूप लगने से मर जाते हैं। जुताई से मिट्टी की उर्वरा शक्ति अच्छी होती है जिससे पैदावार बढ़ती है। एक फसल के बाद दूसरी फसल लगाने के पहले जुताई की जाती है। ग्रीष्मकालीन अर्थात गर्मियों की जुताई और गहरी जुताई के अपने अलग फायदे हैं। इन्हें समझने के पहले जानते हैं आखिर जुताई क्या होती है।

जुताई क्या है

फसल बुवाई से पहले खेत की मिट्टी को ऊपर–नीचे करना जुताई कहलाता है। इसे आप मिट्टी पलटने वाले हल या अन्य किसी आधुनिक कृषि यंत्र से कर सकते हैं। इसका मुख्य उद्देश्य मिट्टी में मौजूद कीड़े–मकौड़ों और उनके अंडों को मारना होता है, जिससे फसल को नुकसान न हो और पैदावार बढ़े।

ग्रीष्मकालीन जुताई

अक्सर देखा जाता है कि किसान जानकारी के अभाव में जुताई का काम बुवाई के ठीक पहले करते हैं जबकि खरीफ की फसल के अच्छे उत्पादन के लिए रबी की फसल कटने के तुरंत बाद खेत की गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु अर्थात गर्मियों में खेत को खाली छोड़ना बहुत ही उपयोगी होता है।

ग्रीष्मकालीन जुताई कब करें

ग्रीष्मकालीन जुताई रबी की फसल कटने के बाद और मानसून आने से पहले की जाती है।

ग्रीष्मकालीन जुताई के फायदे

- मिट्टी में सुधार होता है।
- मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ती है।
- खेत की कठोर परत टूट जाती है।
- इससे मिट्टी को पौधों की जड़ों के विकास के अनुकूल बनाने में मदद मिलती है।
- मिट्टी के नीचे छुपे हानिकारक कीट उनके अंडे व प्यूपा आदि मिट्टी की ऊपरी सतह में आ जाते हैं, जो सूर्य के सीधे संपर्क में आने से नष्ट हो जाते हैं।
- इससे फसलों में होने वाली अनेक बीमारियों जैसे सफेद लट, कटवा इल्ली, लाल भृंग की इल्ली, जड़ गलना आदि रोगों की रोकथाम में मदद मिलती है।

- ग्रीष्मकालीन जुताई करके खरीफ में बोई जाने वाली दलहन, तिलहन और विभिन्न सब्जियों–भाजियों में होने वाले कीट के प्रकोप को रोका या कम किया जा सकता है।

गहरी जुताई

गहरी जुताई में सामान्य या ग्रीष्मकालीन जुताई की तुलना में मिट्टी को थोड़ी गहराई से पलटना होता है।

गहरी जुताई के फायदे

- गहरी जुताई से मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ती है।
- मिट्टी में कार्बनिक पदार्थो की बढ़ोतरी होती है।
- मिट्टी के पलट जाने से जलवायु का प्रभाव सुचारू रूप से मिट्टी में होने वाली प्रतिक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे के भोजन में परिणित हो जाते हैं।
- ग्रीष्मकालीन जुताई कीट एवं रोग नियंत्रण में सहायक है। हानिकारक कीड़े तथा रोगों के रोगकारक भूमि की सतह पर आ जाते हैं और तेज धूप से नष्ट हो जाते हैं।
- ग्रीष्मकालीन जुताई मिट्टी में जीवाणु की सक्रियता बढ़ाती है तथा यह दलहनी फसलों के लिए अधिक उपयोगी है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई खरपतवार नियंत्रण में भी सहायक है। काँस व मोथा आदि के उखड़े हुए भागों को खेत से बाहर फेंक देते हैं। अन्य खरपतवार उखड़ कर सूख जाते हैं। खरपतवारों के बीज गर्मी व धूप से नष्ट हो जाते हैं।
- बारानी खेती वर्षा पर निर्भर करती है अतरू बारानी परिस्थितियों में वर्षा के पानी का अधिकतम संचयन करने लिए ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करना नितान्त आवश्यक है। अनुसंधानों से भी यह सिद्ध हो चुका है कि ग्रीष्मकालीन जुताई करने से बरसात का पानी खेत में समा जाता है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई करने से बरसात के पानी द्वारा खेत की मिट्टी कटाव में भारी कमी होती है अर्थात् अनुसंधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई करने से भूमि के कटाव में कमी आती है।
- ग्रीष्मकालीन जुताई से गोबर की खाद व अन्य कार्बनिक पदार्थ भूमि में अच्छी तरह मिल जाते हैं जिससे पोषक तत्व शीघ्र ही फसलों को उपलब्ध हो जाते है।
- मिट्टी में वायु का संचरण बढ़ता है जो मित्र या लाभकारी सूक्ष्म जीवों के बढ़ने में सहायक होता है।
- गहरी जुताई से सतह पर पड़े फसलों के अवशेष और खरपतवार जमीन के अंदर गड़ जाते हैं। बाद में वही सड़ के जैविक खाद में परिवर्तित हो जाते हैं, जो कि खरीफ की फसलों के लिए महत्वपूर्ण साबित होते हैं।
- गहरी जुताई से मिट्टी की कठोरता कम हो जाती है, जिससे फसलों और सब्जियों की जड़ें आसानी से जमीन के अंदर तक फैल पाती हैं। इससे पोधों को पोषक तत्व प्राप्त करने में आसानी होती है।

जुताई करते समय ध्यान रखें

- जुताई के लिए मिट्टी पलटने वाला हल या खुरपे का उपयोग करें। यह गहरी जुताई के साथ मिट्टी को अच्छी तरह से पलटने में सहायक होता है।
- जुताई की गहराई 15 सेंटीमीटर तक रखना उचित रहता है। गहराई मिट्टी और फसल के प्रकार पर भी निर्भर करती है।
- फसल कटने के बाद अप्रैल से जून तक गहरी जुताई कर लेनी चाहिए।
- खेत में खरपतवार हो तो 10 दिन के बाद दोबारा जुताई करें।
- सुबह और शाम के समय जुताई करना बेहतर होता है।
- जुताई करने से पहले खेत में गोबर की खाद जरूर डालें।